धर्म

धर्म की संस्था सभी समाजों में किसी न किसी रूप में पायी जाती है। धर्म की आवश्यकता समाज में उस में पाये जाने वाले विश्वासों एवं क्रियाओं मात्र में निहित नहीं है अपितु धर्म मानव की अनेकों सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता आया है। यही कारण है कि हिन्दू समाज में धर्म को जीवन का अभिन्न अङ्ग माना जाता है। धर्म ही संसार को धारण किये हुए मनुष्य का सच्चा मित्र है। धर्म के आधार पर ही मनुष्य अपने कर्तव्याकर्तव्य का निर्णय करता है। धर्म ही एक ऐसी धारणा है जिसने कि हिन्दुओं की विचार शक्ति तथा व्यवहार की क्रियाओं को प्राचीन काल से नियन्त्रित किया है। धर्म शब्द इतना विस्तृत है कि यह व्यक्तियों की समस्त क्रियाओं एवं विकास को अपने में समाहित कर लेता है।

संस्था	f	institution
विश्वास	m	belief
क्रिया	f	act
मात्र में	adv	merely
निहित	adj	based
अभिन्न	adj	integral
धारण किया हुआ	trans.>	bound to
कर्तव्य-अकर्तव्य	trans.>	what one should and shouldn't do
निर्णय	m	decision
धारणा	f	basis
व्यवहार	m	business
नियन्त्रित	adj	controlled
विस्तृत	adj	comprehensive
समस्त	adj	all, entire
समाहित	adj	collected

धर्म की परिभाषा

हिन्दू धर्म का अर्थ अंग्रेज़ी शब्द रिलिजन से भिन्न है। रिलिजन शब्द के अर्थ दैवीय विनिमय या मनुष्य एवं मानवेतर के सम्बन्ध से है। परन्तु धर्म शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ धारण करना, रक्षा करना है। धर्म ही वह प्रतिमान है जो कि विश्व को धारण किये हुए है। धर्म किसी भी वस्तु का वह मूल तत्व है जिसके आधार पर उस वस्तु को वह समझा जाता है। उदाहरण के लिये लेखनी का धर्म लिखना है क्योंकि यदि इससे लिखने का कार्य न हो तो वह लकड़ी मात्र रह जाती है। धर्म के संकुचित अर्थ उसमें पाये जाने वाले अनुष्ठानों में है, परन्तु जीवन की समस्त क्रियाएँ धर्म के व्यापक अर्थ में समाहित होती हैं। इसीलिये धर्म के दो स्वरूपों - श्रौत एवं

परिभाषा	f	definition
भिन्न	adj	separate, distinct
दैवीय	adj	divine
विनिमय	m	relationship
मानवेतर	adj	extra-human
(मानव+इतर)		(human + other)
धातु	m	verb root
प्रतिमान	m	principle
वस्तु	f	thing
मूल तत्व	adj+m	basic essence
उदाहरण	m	example
लेखनी	f	a pencil
संकुचित	adj	narrow
अनुष्ठान	m	undertaking
व्यापक	adj	varied, broad
श्रौत	adj	related to śruti = sacred

स्मार्त - का वर्णन किया जाता है। श्रौत धर्म का अभिप्राय श्रुति या वेद वर्जित धर्म से है। श्रुति में ज्ञान काण्ड एवं कर्म काण्ड मात्र का वर्णन है; अतः यहाँ हम धर्म के संकुचित अर्थ से परिचित होते हैं। परन्तु स्मृतियों में जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पाये जाने वाले व्यवहारों के औचित्य का वर्णन है। अतः उसे स्मृति धर्म कहा गया है। इस प्रकार धर्म हमारे सम्पूर्ण जीवन के लिये व्यवहारों एवं कर्तव्यों का निर्णायक है।

डॉ० राधाकृष्णन महोदय ने धर्म की व्याख्या करते हुए लिखा है - "यह 'धृ' धातु से (बनाए रखना, धारण करना, पुष्ट करना) बना है। यही वह मानदण्ड है, जो विश्व को धारण करता है, किसी भी वस्तु का वह मूल तत्व, जिस के कारण वह वस्तु वह है। वेदों में इस शब्द का प्रयोग धार्मिक विधियों के अर्थ में किया गया है। छान्दोग्य उपनिषद् में धर्म की तीन शाखाओं (स्कन्धों) का उल्लेख किया गया है, जिनका सम्बन्ध गृहस्थ, तपस्वी, ब्रह्मचारी के कर्तव्यों से है। जब तैत्तिरीय उपनिषद् हमसे धर्म का आचरण करने को कहता है, तब उसका अभिप्राय जीवन के उस सोपान के कर्तव्यों के पालन से होता है; जिसमें कि हम विद्यमान हैं। इस अर्थ में धर्म

स्मार्त	adj	related to smṛiti= traditional
वर्जित	pp	drawn from
औचित्य	m	properness
निर्णायक	m	an essential
महोदय	m	a term of respect ('His Honour')
व्याख्या	t	interpretation
बनाए रखना	adv+t	to uphold
धारण करना	m+t	to hold
पुष्ट करना	adj+t	to strengthen
मानदण्ड	m	measuring rod
आचरण करना	m+t	to practice, to observe
सोपान	m	stairs, steps
विद्यमान	adj	present, extant

शब्द का प्रयोग भगवद् गीता और मनुस्मृति, दोनों में हुआ है। एक बौद्ध के लिए धर्म बुद्ध और सङ्घ या समाज के साथ-साथ 'त्रिरत्न' (तीन रत्न) में से एक है। पूर्वमीमांसा के अनुसार धर्म एक वांछनीय वस्तु है, जिसकी विशेषता है प्रेरणा देना। वैशेषिक सूत्रों में धर्म की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि जिससे आनन्द (अभ्युदय) और परमानन्द (निःश्रेयस्) की प्राप्ति हो, वह धर्म है। अपने प्रयोजन के लिए धर्म की परिभाषा हम इस प्रकार कर सकते हैं कि यह चारों वर्णों के और चारों आश्रमों के सदस्यों द्वारा जीवन के चार प्रयोजनों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) के सम्बन्ध में पालन करने योग्य मनुष्य का समूचा कर्तव्य है।"[1]

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'धर्म' सब्द का अर्थ ईश्वरीय व्यवहार मात्र से नहीं है, अपितु जीवन के उन पहलुवों से भी है जिनके द्वारा हमारी नित्य प्रति की क्रियाएँ नियन्त्रित होती हैं। धर्म में हमारे सभी धार्मिक अनुष्ठान, मूर्ति पूजा, ध्यान, वृत्त एवं उपवास, तीर्थ यात्रा, श्राद्ध एवं वर्णाश्रम, मानव एवं कुल की रीति नीति समाहित हैं।

सङ्घ	PNm	The Order
वाँछनीय	adj	desirable
प्रेरणा देना	f+t	to give direction
सदस्य	m	member(s)
समूचा	adj	highest
पहलू	m	side
नियन्त्रित	adj	controlled
वृत्त	m	livlihood
उपवास	m	fasting
समाहित	adj	'rolled into one'

---

[1] डॉ० राधाकृष्णन, धर्म और समाज, पृष्ठ १२७.

धर्म के स्रोत

धर्म का उद्भव ज्ञान के उद्भव एवं विकास के साथ-साथ ही माना जाता है। हिन्दू समाज में विश्वास है कि ज्ञान का आदि मूल वेद या श्रुति है। वेद हिन्दुवों का आदि ग्रन्थ है। इस के पश्चात् श्रुति के आधार पर बनाई गयी ऋषियों की व्यवस्थाएँ आती हैं। महापुरुष किसी भी समाज में आदर्शों के निर्माता होते हैं; अतः उनके आचरण भी धर्म के स्रोत कहे जा सकते हैं। अनेक परिस्थितियों में धर्म की व्याख्या मनुष्य को अपने मस्तिष्क से करनी पड़ती है। यदि मनुष्य की बुद्धि एवं अन्तरात्मा किसी वस्तु को ग्राह्य नहीं समझती है तो वह धर्म विदित होने पर भी अस्वीकार करने योग्य हो जाता है। इस प्रकार धर्म के मुख्य चार स्रोत माने जा सकते हैं :

(१) श्रुति या वेद, (२) स्मृति और स्मृतिज्ञों का व्यवहार, (३) धर्मात्मा लोगों का आचरण, और (४) व्यक्ति का अपना अन्तःकरण।

वेद हिन्दू धर्म के मूल एवं आधार ग्रन्थ है। वेदों में जो मन्त्र या ऋचाएँ

स्रोत	m	channel, stream
उद्भव	m	conception
विकास	m	*here* : evolution
आदर्श	m	ideal
निर्माता	m	creator
आचरण	m	behaviour, practices
परिस्थिति	f	surroundings
व्याख्या	f	description
मस्तिष्क	m	brain
अन्तरात्मा	m	inner self
ग्राह्य	adj	acceptable
अन्तःकरण	m	soul, Higher Self
ऋचाf	hymn	

हैं वे ऋषिओं को दिव्य ज्ञान का प्रकाश हैं। ऋषिओं ने जगत की उत्पत्ति, मनुष्य जीवन की चरम गति एवं कर्मकाण्ड से सम्बन्धित अनेक विषयों पर मानव कल्यान के लिए अपनी विश्वासपूर्ण , वैज्ञानिक एवं हृदयस्पर्शी व्यवस्थाएँ दी हैं। वेदों का उद्घोष 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' है। हिन्दू धर्म के अन्तर्गत कुछ सम्प्रदाय ऐसे भी हैं जो वेदों को प्रमाण नहीं मानते हैं। कुछ विद्वानों का मत है कि श्रुति में वेद तथा तन्त्र दोनों ही आते हैं। जनसाधारण वेद का ज्ञान रखते हुए भी अनेक व्यवहारों के औचित्य के लिए वेदों की ही दुहाई देते हैं।

वेदों में धर्म का कोई सुव्यवस्थित विवरण नहीं है, उनमें आदर्शों की ओर

दिव्य	adj	heavenly
चरम गति	f	final fate
कल्याण	m	welfare
विश्वासपूर्ण	adj	hopeful
व्यवस्था	f	regulation, system
उद्घोष	m	message
तमसो मा ज्योतिर् गमय	Sans.>	"From ignorance, you may not cause light to arise."
कल्यान	m	welfare
के अन्तर्गत	pp	included
सम्प्रदाय	m	tradition, sect
प्रमाण	m	authority
जनसाधारण	m	common folk
दुहाई देना	f+t	to appeal to
सुव्यवस्थित	adj	well arranged, regular
विवरण	m	description
आदर्श	m	standard, ideal

इंगित किया गया है। अतः आचरण के लिए सुव्यवस्थित नियम एवं आदेश का निर्माण स्मृतियों एवं धर्मशास्त्रों के द्वारा किया गया। स्मृति का कोई भी नियम यदि श्रुति के विपरीत हाता है, तो श्रुति ही प्रमाणित मानी जाती है। सामान्यतया स्मृति ने श्रुति का ही अनुसरण किया है। अतः व्यवहार के लिए इन्हें प्रमाण ही स्वीकार किया जाता है।

धर्माचारी व्यक्तियों के व्यवहार धर्म के अन्यतम स्रोत हैं। वेदों के जानने वाले आदर्श पुरुष जिस प्रकार आचरण करते हैं, वे सामान्य व्यक्तियों के लिए पथप्रदर्शक होते हैं। महाभारत में धर्मपुत्र युधिष्ठिर महाराज यक्ष को उसके यह पूछने पर कि धर्म क्या है? उत्तर देते हैं कि 'महाजन जिस मार्ग से गए हैं वह ही सच्चा मार्ग है।' अन्यथा धर्म का तत्व तो बहुत अस्पष्ट है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यह आवश्यक नहीं है कि व्यक्ति अनिवार्य रूप से ब्रह्मवेत्ता या ब्राह्मण ही हो। याज्ञवल्क्य महोदय का तो कथन है कि स्मृति

इंगित	adj	hinted at
आचरण	m	religious observance(s)
निर्माण	m	construction
आदेश	m	command
के विपरीत	pp	in opposition to
प्रमाणित	adj	proven
सामान्यतया	adv	ordinarily
अनुसरण करना	m+t	to conform with
धर्माचारी	m/adj	follower of a religion
अन्यतम	adj	another
सामान्य	adj	normal, ordinary
पथप्रदर्शक	m	guide
यक्ष	PMm	Yakṣa (a class of demi-gods)
अस्पष्ट	adj	unclear, non-specific
अनिवार्य रूप से	adv.ph	invariably
ब्रह्मवेत्ता	adj	knowing Brahma

का यदि परम्परा सम्मत विधान न हो तो भी उसे नहीं मानना चाहिये। यदि शूद्र भी श्रेष्ठ आचरण करता है तो वह अनुकरणीय है।

धर्म का स्रोत मनुष्य का विशुद्ध अन्तःकरण एवं उसकी तर्क बुद्धि भी माना गया है। शुद्ध अन्तःकरण यदि किसी बात की स्वीकृति न देता हो तो उसे नहीं करना चाहिये। याज्ञवल्क्य जी कहते हैं कि अपनी आत्मा को लगने वाले तथा विशुद्ध संकल्प वाले मन से उद्भूत कार्यों हो ही करना चाहिये। इसी प्रकार मनु महाराज हमें उस कार्य को करने की अनुमति देते हैं जिससे कि अन्तरात्मा प्रसन्न हो। महाभारत का मत है कि जो बात युक्ति-युक्त हो उसे स्वीकार करना चाहिये, फिर चाहे वह किसी भी बालक ने कही, या किसी तोते ने; पर जो बात युक्ति-युक्त न हो वह चाहे किसी वृद्ध ने कही हो या स्वयं मुनि शुकदेव ने उसे अस्वीकार ही कर देना चाहिये।

परम्परा	m	tradition
सम्मत	m	agreement
अनुकरणीय	adj	to be followed
तर्क	m	logic
स्वीकृति	f	acceptance
संकल्प	m	will
उद्भूत	adj	produced

trans. One should do only those acts (of his) which are dear to his soul and produced by a pure-willed mind.

अनुमति	f	suggestion

trans. . . . gives us the suggestion to act in such a way as is pleasing to our Higher Self.

युक्ति-युक्त	adj	proper, reasonable
फिर चाहे	conj	even if, no matter whether
तोता m	parrot	

इस प्रकार धर्म हिन्दू समाज में कोई मानवेतर आज्ञा, परम्परा या प्रथा ही नहीं है अपितु सत्य एवं तर्क के आधार पर व्यवहार की विधिसंहिता एवं आदर्श की कसौटी है।

धर्म के स्वरूप

धर्म का प्रारम्भ मनुष्य व्यवहारों की व्यवस्था करने में हुआ एवं विकास रहस्यमयी मुक्ति की प्राप्ति के लिए। उपनिषद् धर्म को समस्त ब्रह्माण्ड का आधार मानते हैं; प्रत्येक वस्तु धर्म पर आश्रित है अतः धर्म सर्वश्रेष्ठ है। बृहदारण्यक उपनिषद् के अनुसार शारीरिक एवं भौतिक दृष्टि के कमज़ोर भी धर्म के पालन करने से बड़े से बड़ों को अधिकार में कर सकते हैं। महाभारत धर्म को विश्व को नियन्त्रित करने वाली शक्ति मानता है। रामायण धर्म को आनन्द प्रप्ति का साधन मानता है। यदि कर्म व्यक्ति को बन्धन में डालता है तो व्यक्ति को धर्म कर्म बन्धन से मुक्ति दिलाता है। धर्म के पालन से ही मनुष्य को मोक्ष की प्राप्ति संभव है। धर्म के इस पहलू ने ही उसको एक रहस्यमयी शक्ति बना दिया है। अन्ततः धर्म क्या है? संक्षेप में धर्म के अन्तर्गत आने वाली व्यक्ति एवं समाज की व्यवस्थाओं का हम यहाँ उल्लेख करेंगे।

विधिसंहिता	m	collection of rules
कसौटी	f	proof, test
रहस्यमयी	adj	esoteric
ब्रह्माण्ड	m	(Brahma's egg) the Universe
आश्रित	adj	dependent (on)
शारीरिक	adj	bodily
भौतिक	adj	material, corporeal
कमज़ोर	adj	weak

trans. Even those who are weak from a bodily and corporeal point of view can control the most powerful through the protection of Dharma.

धर्म का सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक रूप उसके उन तत्वों में निहित है जिसे कि मानव धर्म के नाम से पुकारा जाता है। मानव धर्म प्रत्येक मनुष्य को पालनीय है; वह चाहे किसी जाति का हो, किसी सामाजिक स्थिति एवं देश का हो। स्मृतिकार मनु ने मानव धर्म के दस कर्तव्य ये बताए हैं : (१) धृति (धैर्य), (२) क्षमा, (३) दम (संयम), (४) अस्तेय (चोरी न करना), (५) शौच (पवित्रता), (६) इन्द्रियनिग्रह, (७) धी (बुद्धि), (८) विद्या (ज्ञान), (९) सत्य, (१०) अक्रोध। भगवत पुराण मानव धर्म की इस प्रकार व्याख्या करता है कि उसे अहिंसा, सत्यवादी, अस्तेय, संयमी, अक्रोधी एवं दूसरे मनुष्यों का हितचिंतक होना चाहिये। महाभारत अहिंसा को परम् धर्म मानता है एवं गीता सत्य को।

हिन्दू धर्म के अनुसार मनूष्य के जीवन का उद्देश्य भगत् प्राप्ति है। यह

सार्वभौमिक	adj	universal
सार्वकालिक	adj	eternal
पालनीय	adj (grndv)	to be observed, protected
स्मृतिकार	m	the Smṛti writer
धृति	m	resolve
क्षमा	f	forgiveness
दम	m	self-restraint
अस्तेय	m	non-stealing
शौच	m	purity
इन्द्रियनिग्रह	m	restraint of the organs of sense
धी	f	knowlege
विद्या	f	understanding
अक्रोध	m	non-anger
व्याख्या करना	f+t	to describe
हितचिंतक	m	benefactor
उद्देश्य	m	goal

चार पुरुषार्थों के द्वारा ही संभव है। ये पुरुषार्थ हैं - धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष। यहाँ धर्म शब्द का अर्थ ज्ञानार्जन से है। इन पुरुषार्थों की प्राप्ति मनुष्य किस प्रकार कर सकता है? ऋषियों ने उसके जीनव को चार भागों में विभाजित किया जिन्हें कि आश्रम के नाम से जाना जाता है। ये चार आश्रम हैं - ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास। मनुष्य अपने आश्रम धर्म का पालन करने से मोक्ष का अधिकारी हो जाता है। ब्रह्मचर्य आश्रम व्यक्ति को ज्ञान की प्राप्ति के लिए है, जिससे कि वह लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति कर सके। गृहस्थ में वह अर्थोपार्जन कर अनेक यज्ञों द्वारा समाज के दायित्वों का पालन करे। इसी भाँति काम का सेवन भी इसी आश्रम में करे जिससे कि सृष्टि का विकास अनवरत रहे एवं उसकी समस्त लौकिक इच्छाएँ पूरी हो जाएँ। लौकिक इच्छाओं की पूर्ति के बाद उसे वानप्रस्थी होकर ईश्वराराधन में अधिकांश समय लगाना चाहिये। जब वह ईश्वर सांनिध्य की स्थिति में पहुँच जाए, उस समय उसे गृह त्याग कर संन्यासी हो कर एकमात्र मोक्ष प्राप्ति का प्रयत्न करना चाहिये।

ज्ञानार्जन	m	gaining knowlege
अधिकारी	m	possessor, ruler
लौकिक	adj	worldly
पारलौकिक	adj	other-worldly
उन्नति	f	advancement
दायित्व	m	responsibility
इसी भाँति	adv.ph	in like manner
सृष्टि	f	creation, the world
अनवरत	adv	unceasingly
ईश्वराराधन	m	worship of God
सांनिध्य	m	nearness
एकमात्र	adv	only

आश्रम-धर्म मात्र से तो व्यक्ति का पुरुषार्थ प्राप्ति का विधान हुआ। व्यक्ति का कर्म क्षेत्र है संसार या समाज। अतः समाज में व्यक्ति किस व्यवहार करे? उसमें वह अपना पद एवं कार्य किस प्रकार निश्चय करे? की समस्या पर ऋषियों ने ध्यान दिया एवं वर्ण-धर्म की व्यवस्था की। वर्ण-धर्म आश्रम-धर्म से भिन्न नहीं हो सकते हैं - अतः दोनों को एक साथ ही बोला जाता है - वर्णाश्रम धर्म। चार आश्रमों की भाँति ही चार वर्गों का निर्माण किया गया है। ये हैं - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र। ब्राह्मण की स्थिति समाज में उसके मुख्य कार्य ज्ञानदान या विद्यादान के कारण सर्वश्रेष्ठ मानी गयी। ब्रह्मचर्य आश्रम, व्यक्ति को धर्म या ज्ञान प्राप्ति का स्थल है। ज्ञान पारलौकिक ही नहीं अपितु लौकिक भी आवश्यक है क्योंकि अन्य दो पुरुषार्थ अर्थ एवं काम की उपासना इसके बिना संभव नहीं है। क्षत्रियों को समाज रक्षा का कार्य दिया गया; अतः उन्हें समाज संस्तरण में द्वितीय स्थान दिया गया। वैश्य धर्म निश्चित किया गया समाज की अर्थ-व्यवस्था का संचालन। शूद्रों का एक ही धर्म बताया गया कि वे उपर्युक्त सभी वर्णों की सेवा करें। इस प्रकार व्यक्तियों को समाज में उनके गुण-कर्म एवं स्वभाव के अनुसार कार्य एवं पद दिये गये।

मनुष्य के लिए धर्म ने जहाँ पुरुषार्थों का निर्धारण किया, वहाँ उसे

मात्र से	adv	merely
की समस्या पर	pp	in connection with
की भाँति	pp	similar to
निर्माण	m	construction
स्थल	m	place, opportunity
संस्तरण	m	(covering) system
संचालन	m	management
गुण-कर्म	m	characteristic activities
निर्धारण	m	defining

समाज में रहकर वर्णाश्रम धर्म के पालन का विधान। परन्तु व्यक्ति का जन्म एवं विकास परिवार के अन्तर्गत हाता है। अतः धर्म ने कुल धर्म की व्यवस्था भी की है। कुल धर्म के अन्तर्गत मनुष्य को उसके द्वारा किये जाने वाले पंच महायज्ञों की व्यवस्था है। इन यज्ञों की सहायता से ही मनुष्य अपने ऊपर आये हुए ऋणों से मुक्त होता है। ये ऋण हैं - देव ऋन, ऋषि ऋण, पितृ ऋण, अतिथि ऋण एवं भूत ऋण। इन ऋणों से उऋण (उतृण) होने के लिए व्यक्ति को नित्यप्रति पंच महायज्ञ करना है - (१) ब्रह्म यज्ञ - वेद का स्वाध्याय करना, (२) पितृ यज्ञ - अपने पिता का तर्पण या प्रजनन करना, (३) दैव यज्ञ - हवन करना, (४) भूत यज्ञ या बलिवैश्म यज्ञ - जीवों को भोजन देना, (५) अतिथि यज्ञ। मनुस्मृति के अनुसार जो कोई सामार्थ्यानुसार इन पंच महायज्ञों को करता है, वह नित्य हिंसा के पाप से मुक्त होता रहता है।

कुल धर्म में अन्य पारिवारिक व्यक्तियों से सम्बन्ध का भी विवेचन आवश्यक है। इसमें पिता या कर्ता के, कर्ता की स्त्री के, पति-पत्नि के परस्पर कर्तव्याकर्तव्य का विवेचन है। इसे हम हिन्दू परिवार की संरचना में लिख आये हैं।

कुल-धर्म	m	group Dharma
संध्या करना	f+t	to perform the ritual morning, noon and evening services
तर्पण	m	libation to deceased ancestors
प्रजनन करना	m+t	begetting offspring
हवन करना	m+t	to do the fire ceremony
बलिवैश्म	m	oblation
सामर्थ्यानुसार	adj	according to one's ability
विवेचन	m	investigation
कर्ता	m	master
परस्पर	adj	mutual
संरचना	f	writing, chapter

हिन्दुवों में धर्म को एक स्थायी शक्ति नहीं माना है जो कि प्रत्येक देश एवं काल में एकता ही रहता है। अपितु धर्म का स्वरूप देश एवं काल के अनुसार बदलता रहता है। इसे युग धर्म के नाम से पुकारा जाता है। श्री बी० जी० गोखले महोदय का मत है कि समय यथा प्रदेश के सिद्धान्त ने धर्म को गतिशील शक्ति बना दिया जो कि समय, स्थान एवं मनुष्य की आवश्यकताओं के साथ अनुकूलन कर सके।

स्थायी	adj	stable
एकसा	adj	one and the same
सिद्धान्त	m	theory
गतिशील	adj	ongoing
अनुकूलन	m	accord